p; Need to formulate a comprehensive policy for conservation and promotion of various forms of folk art in the country.

श्री केशव प्रसाद मौर्य (फूलपुर) ः मैं सरकार का ध्यान भारत की लोक कलाओं एवं लोक कलाकारों के संरक्षण और संवर्धन की ओर दिलाना चाहता हूँ।

भारत जैसे विशाल देश जिसके गौरवमयी इतिहास और समृद्ध परम्पराओं को आज तक हमारे पास पहँचाने की वाहक बनीं हमारी अनगिनत लोक कलाएं जिनके लाखों-लाख साधक, मर्मज्ञ एवं विशेषज्ञ आज बेबसी व लाचारी का जीवन जीने को मजबूर हैं। यह सोचनीय विषय है कि आज जो लोक कलाएंÃ¬ खेत-खलिहान, जंगल-पेड़, जल-जमीन, रीति-रिवाज तथा तीज-त्यौहार की बात करती हों और जिन लोक कलाओं ने इतने महत्वपूर्ण योगदान दिये हों, क्या उनकी अनदेखी करना उचित है? वर्तमान परिदृश्य में विलुप्ति के कगार पर पहँची लोक कलाएं, लोक कलाकारों की दयनीय, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति, मरते लोक कलाकार, सिसकती लोक कलाएं, कितनी लोक कलाओं की आशा उनके अन्तिम अवशेष, चन्द बुजुर्गों पर टिकी हैं जो कि उनके अवसान के साथ ही दम तोड़ देंगी। अवसर, सम्मान और अनुदान के अभाव ने लोक कलाओं की जड़ें सुखा दी हैं।

मेरा अनुरोध है कि संस्कृति मंत्रालय द्वारा निम्न नीति निर्धारण तथा उच्च प्राथमिकता के आधार पर निम्न कार्यों का क्रियान्वयन किया जाएः-

लोक कला अध्यादेश जिसके तहत भारत वर्ष की समस्त लोक कलाओं और कलाकारों को सांस्कृतिक मुद्दों में सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करते हुए संरक्षित और दुर्लभ श्रेणी में रखा जाए। लोक कलाओं को राष्ट्रीय धरोहर घोषित कर संरक्षित किये जाने संबंधी नीति का निर्माण किया जाए।

बुजुर्ग कलाकारों को पेंशन, विशेषकर 70 वर्ष के ऊपर के कलाकारों को तत्काल फार्म प्राप्ति पर पेंशन व अनुदान दिया जाए।

लोक कलाओं के लिए क्षेत्रवार और विधावार बजट का आवंटन होना चाहिए ताकि अनुदान प्रत्येक लोक कला और लोक कलाकार तक पहँच सके। राष्ट्रीय लोक कला अकादमी की स्थापना राजधानी दिल्ली में होनी चाहिए तथा लोक कलाकारों के गरीबी उन्मूलन हेतु वैकल्पिक आय वृद्धि योजना की नींव रखी जाए।